

# ॐ स्वस्तिवाचनम्- Sampurn Swasti Vachan Mantra

## मंत्र १

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।

देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे-दिवे ॥

Transliteration:

Om Ā No Bhadrāḥ Kratavo Yantu Vishvato'dabdhāso Aparītāsa Udbhidaḥ ।

Devā No Yathā Sadamid Vṛdhe Asannaprāyuvo Rakṣitāro Dive-Dive ॥

हिंदी अर्थ:

"हे देवों! चारों दिशाओं से हमारे पास शुभ विचार और श्रेष्ठ संकल्प आएँ।

वे अटूट, अबाधित और नव-जागरण देने वाले हों। देवता हमारी रक्षा करें और प्रतिदिन हमारी उन्नति करें  
ऐसे रक्षक जो कभी थकते नहीं।"

यह प्रथम मंत्र संपूर्ण विश्व से शुभ शक्तियों को आमंत्रित करने का आह्वान है।

## मंत्र २

ॐ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्तताम् ।

देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥

Transliteration:

Om Devānāṃ Bhadrā Sumatirṛjūyatāṃ Devānāṃ Rātirabhi No Nivartātam ।

Devānāṃ Sakhyamupaṣedimā Vayaṃ Devā Na Āyuh Pratirāntu Jīvase ॥

हिंदी अर्थ:

"देवताओं की श्रेष्ठ बुद्धि और कल्याणकारी विचार हमारी ओर आएँ। देवताओं के आशीर्वाद और वरदान  
हमें प्राप्त हों।"

हम देवताओं की मित्रता प्राप्त करें और देवता हमें दीर्घायु दें।"

यह मंत्र दिव्य मित्रता और दीर्घ आयु की प्रार्थना है।

### मंत्र ३

ॐ तान् पूर्वयानिविदाहूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम् ।

अर्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

#### Transliteration:

Om Tān Pūrvayānividāhūmahe Vayam Bhagam Mitramadatim Dakṣamasridham ।

Aryamaṇam Varuṇam Somamashvinā Sarasvatī Naḥ Subhagā Mayaskat ॥

#### हिंदी अर्थ:

"हम उन पूर्वज देवताओं का आह्वान करते हैं भग, मित्र, अदिति, दक्ष, अर्यमन, वरुण, सोम और अश्विनीकुमारों को।

माँ सरस्वती हमें सौभाग्य और आनंद प्रदान करें।"

इस मंत्र में माँ सरस्वती और नव देवताओं का एक साथ आह्वान किया गया है।

### मंत्र ४

ॐ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।

तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ॥

#### Transliteration:

Om Tanno Vāto Mayobhu Vātu Bheṣajam Tanmātā Pṛthivī Tatpitā Dyauḥ ।

Tad Grāvāṇaḥ Somasuto Mayobhuvastad Ashvinā Śṛṇutaṃ Dhiṣṇyā Yuvam ॥

#### हिंदी अर्थ:

"वायु हमारे लिए सुखकारी और औषधीय वायु बहाए। माता पृथ्वी और पिता आकाश यह कल्याण हमें दें।

सोम रस को धारण करने वाले पत्थर और अश्विनीकुमार हे बुद्धिमान देवों! हमारी यह प्रार्थना सुनें।"

यह मंत्र प्रकृति के पाँच तत्वों वायु, पृथ्वी, आकाश, जल और अग्नि से आशीर्वाद माँगने का वैदिक स्वरूप है।

### मंत्र ५

ॐ तमिशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं दिविमीमहे वयम् ।

पूषा नो यथा वेदसामिद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

#### Transliteration:

Om Tamiśānam Jagatastaṣṭhuṣaspatim Dhiyam Divimīmahe Vayam ।

Puṣā No Yathā Vedasāmid Vṛdhe Rakṣitā Pāyuradabdhāḥ Svastaye ॥

#### हिंदी अर्थ:

"हम उस परमेश्वर का ध्यान करते हैं जो चराचर जगत के स्वामी हैं और आकाश में स्थित हैं। पूषा देव हमें उसी प्रकार बढ़ाएँ जैसे वे ज्ञानियों को बढ़ाते हैं। वे हमारे अटूट रक्षक और हमारे कल्याण के संरक्षक हों।"

इस पंचम मंत्र में पूषा देव से विशेष रूप से स्वस्ति अर्थात् कल्याण की याचना की गई है।

### मंत्र ६

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

#### Transliteration:

Om Svasti Na Indro Vṛddhasravāḥ Svasti Naḥ Pūṣā Vishvavedāḥ ।

Svasti Nastārksyo Ariṣṭanemiḥ Svasti No Bṛhaspatirdadhātu ॥

#### हिंदी अर्थ:

"महान यश वाले देवराज इंद्र हमारा कल्याण करें। सर्वज्ञ पूषा देव हमारा कल्याण करें। संकटनाशक गरुड़ हमारा कल्याण करें। देवगुरु बृहस्पति हमें कल्याण प्रदान करें।"

यह **Swasti Vachan Mantra** का सर्वाधिक प्रसिद्ध और व्यापक रूप से पढ़ा जाने वाला मंत्र है। इसमें चार महान दिव्य शक्तियों से एक साथ कल्याण माँगा गया है।

### मंत्र ७

ॐ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः ।

अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह ॥

#### Transliteration:

Om Pṛṣadashvā Marutaḥ Pṛshnimātarāḥ Shubhaṃyāvāno Vidatheṣu Jagmayāḥ ।

Agnijihvā Manavaḥ Sūracakṣaso Vishve No Devā Avasāgamanniha ॥

#### हिंदी अर्थ:

"माता पृश्नि के पुत्र, चित्तकबरे घोड़ों वाले, शुभकारी, यज्ञों में आने वाले, अग्नि को जिह्वा रूप धारण करने वाले और सूर्य जैसी दृष्टि रखने वाले मरुतगण (पवन देव) हमारे पास आएँ। समस्त देव हमारी रक्षा के लिए यहाँ पधारें।"

मरुतगण वायु के देवता हैं जो शक्ति, गति और जीवनशक्ति के प्रतीक हैं।

### मंत्र ८

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

**Transliteration:** Om Bhadram Karṇebhiḥ Śṛṇuyāma Devā Bhadram

Pashyemākṣabhiryajātrāḥ । Sthirairāṅgaistuṣṭuvāmsastanūbhirvyashemahi Devahitam

Yadāyuh ॥

#### हिंदी अर्थ:

"हे देवों! हम कानों से शुभ सुनें। हे पूजनीय देवों! हम आँखों से शुभ देखें।

मजबूत अंगों और स्वस्थ शरीर से आपकी स्तुति करते हुए हम देव-हित के लिए दी गई आयु को पूर्णतः जिएं।"

यह मंत्र स्वस्थ इंद्रियों, दीर्घायु और देव-सेवा में समर्पित जीवन की प्रार्थना है।

## मंत्र ९

ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।  
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुरग्नात् ॥

**Transliteration:**

Om Shataminu Sharado Anti Devā Yatrā Nashcakrā Jarasam Tanūnām ।

Putrāso Yatra Pitaro Bhavanti Mā No Madhyā Rīriṣatāyuragnāt ॥

**हिंदी अर्थ:**

"हे देवों! हम सौ शरद ऋतु (वर्ष) तक जिएं। हमारे शरीर वृद्धावस्था तक पहुँचें।  
जहाँ पुत्र स्वयं पिता बनते हैं वह अवस्था हम प्राप्त करें। हमारी आयु बीच में ही अग्नि से नष्ट न हो।"  
यह मंत्र सौ वर्ष की पूर्ण और स्वस्थ आयु के लिए एक हृदयस्पर्शी प्रार्थना है।

## मंत्र १०

ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिमाता स पिता स पुत्रः ।  
विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिरजनित्वम् ॥

**Transliteration:**

Om Aditirdyaouraditarantarikṣamadatimātā Sa Pitā Sa Putrah ।

Vishve Devā Aditiḥ Pañca Janā Adatirjātamadatirajanitam ॥

**हिंदी अर्थ:**

"अदिति ही आकाश है, अदिति ही अंतरिक्ष है, अदिति ही माता है, वही पिता है और वही पुत्र भी है।  
समस्त देव अदिति हैं, पाँचों जन अदिति हैं। जो जन्म ले चुका है वह भी अदिति है और जो जन्म लेने वाला  
है वह भी अदिति है।"

यह दसवाँ मंत्र **Sampurn Swasti Vachan Mantra** का सर्वोच्च दार्शनिक मंत्र है। माँ अदिति को सम्पूर्ण  
सृष्टि का आधार बताया गया है वे ही भूत, वर्तमान और भविष्य हैं।

**शांति पाठ समापन (Shanti Path)**

Swasti Vachan Mantra का समापन इस महान शांति पाठ से होता है:

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।  
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥  
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

**Transliteration:**

Om Dyauḥ Shāntiarantarikṣam Shāntiḥ Pṛthivī Shāntirāpaḥ Shāntiroṣadhayaḥ Shāntiḥ ।  
Vanaspatayaḥ Shāntirishve Devāḥ Shāntirbrahma Shāntiḥ Sarvaṃ Shāntiḥ Shāntireva  
Shāntiḥ Sā Mā Shāntiredhi ॥

Om Shāntiḥ Shāntiḥ Shāntiḥ ॥

**सरल हिंदी अर्थ:**

"आकाश में शांति हो। अंतरिक्ष में शांति हो। पृथ्वी पर शांति हो। जल में शांति हो। औषधियों में शांति हो। वनस्पतियों में शांति हो। समस्त देवों में शांति हो। ब्रह्म में शांति हो। सब कुछ शांतिमय हो। शांति ही शांति हो। वह शांति मुझे प्राप्त हो। ॐ शांति, शांति, शांति।"

यह शांति पाठ समस्त ब्रह्माण्ड में आकाश से लेकर पृथ्वी तक, जड़ से लेकर चेतन तक शांति की कामना करता है। "शान्तिः" का तीन बार उच्चारण तीन प्रकार के तापों **आध्यात्मिक, दैविक और भौतिक** से मुक्ति की प्रार्थना है।